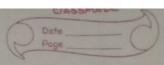


र्मा वस्तान क्रांड अविवार्त केत्र लडकार्ड हाडा। लक्ष्यांव के उपना यात्र स्टेशिक हेरे न्या करात के में क्षाताक के मार्थिक किर्मित । तह क्षातिक किर्मित क्षिक अपने मिकिंड करत विकाकारी क्षित्र की अधार्ष नाम परवर परेप्या एए-छए, यायम - छात्री, रमानारेश यहा क्रम्पक्रम, एव - यवण, विन्यास व्यक्ति व्यक्तिविन्याहस महिश्वित है । इसे अया रक्षियां रक्षियां रक्षियां दिल्लान सहार विदेश सरक पांचलन कराव अवनवाने पालक साम्रह म्या - यूयरेंग लीचे मिर्या छप्नेजीन मान प्रमूतन प्राचन अपन विकासण ए क्य कि नक्षा क्ष्य कार्य कार्य कार्या विकास म्या। वर्ष्या वर्षात्रकार भ्रम्पति सम्मात महत्र प्राहरूम करित। वरमान प्रमाण के श्रामण गमा सामा किया अस्तरा अह कार काराय अवायम अहर एका कि कार भविद्या अ कि कि काउना प्रमु विन्याम, क्र - अ० फारव प्रावा कर आरोहन अवगरिष रग्न केंद्र एक विन्याम प्राक क्र- अन्यात द्वारा जन अर्थिक अर्थिक रशकाव द्वाकम समूद एता हिरान्य कका यत:-(क) कामन पालपूरण जाम समयेन पान विन्यास, क्र - अ? कारन कारम विद्या कार्या कार्य वाहर कर कार्य कार्य कार्य राहर प्याद्वासक नियुत्तम करिक लग्लगद्व। यानुष्ठ यमनिया वित्र नेपलम क्रिक हमानारक। अभूवन अभा जिंक प्रतिक प्रमुख विखाना अनाउ र लिस्ट एउँ के- सहस्राये कालाये के वार्ष सक्य करा। ८। एन रिन्मम, क्र - अश्यार जापि नियंत्र करियति दक्त रक्ष कार्य अर्थ करिय लाखा? क्ष्मक प्रमुख्य काराय भाषाय भाषाय अस्ति व्यक्ति काराय क्र अल्यान निराद्य किन करिन पारि । प्रक्रित न्यां प्राक्त क्र - अल्यान पाई निक अश्राद्ध अथन किलिटिक वर्षे कार्षिक अपूर्ण एमिन अराव करि एक विन्याम प्याव क्र - अर्था विराज्य करा याप्य । व्याप त्याहर हक्त्य प्रपहल्प हल्प, अपड्रप प्रान्तिक भार्त मुखायाया प्रमेषे प्रमक्त नाथमकि रमानकति, क्रीर



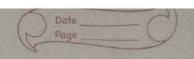
ज्या हिन से अहरे व स्मिन्य स्

अ) जमा अविकास त्याक्त आर्थ मिप्रिक है भारा प्रकार पत जिल्लामा कू- मरकार अभावा जिराराचा

घ) करे नकवरिक अष्टरक जिकल्य भग त्याष्ट्र अपनिर्मिक जाया अथान्य प्रज्ञितिक्या विराक्षारा

का उपवेती; 'त्रमपार्वका' — अव त्याव जात्र विन्धा । जात्र विन्धा प्रति का विवाद का व

द्धः छप्रेची, त्यप्रभविका व्यक्ति प्रमुक्तिमा चेशप्र रक्षात्य प्रमण्डाण व्यक्ति त'त हमर्राहा ए जा कारत । कि स उत्रत ज्यानि - वृद्धिः अ अभद्धा वर्षे विख्यात्मव विग्रामाग् । व्रेग्नम् क्याल्य रिष्टरक तिल आर्थानिकि। रक्ट ७६४- इर्नीयाप उत्ति व्योध क्रिप् जुत्त प्रायक किस रहते हैं। रुड़ स्तामक उपक्री उपकार उपना किरक हें भीड़न हमारा कि के आता जमको अस्ति रमां छत्। यहन कारा करता छ रण्याका पक्षाण अह यह यह यह यह स्वारा प्रमारिन्याम, कु मक्षार क्मीप रणकार क्रिए अविहरू विकिए हर्जिंग हिन्दिता विकासाय महत्व हणकार रम्या मार्थ कि कि का राराष्ट्र में या निवास विकित्य वि रिरेपका शह्य करा। कि ला अपन काक्र क काक्रम का अपन का काक्र का कि क क लगरण इने - वक पद्मिक भुमा प्रारू क्र - अल्फ्रमूल शक्ष अर्थ लक्षा किरिहम्। WY अभन प्रकृत्य विशिष अम्बद्ध हाम अभीका प्रमहत् यूनि विण्याम करता मीया द्वीतर्य नम्बर र्यमत्परीय प्रथम रसम्पर्येन रयस्म सर्व न'रूप-रहार्मिक रेवि हैन रमरा। यन पीरान दुनि आयर हमिश्रामे प्राथमा अभावाण अल्प १व हमू १व हम्या वर अश्रव अपन-थिरें चेंद्रमार यानारण जाना जा खी दिकर प्रति किता है हुत त्रम्म स्पर्म लगिरिएप अश्रम विश्रिपंत प्रभूबार प्रमूति विपासमा वीप ब्रम्बूहरू प्रयूत किन्यान नैयंत यानूष्ठ परण त्याराप-त्याराप करित्न छपण रूपारा प्रति (अद्भव प्रमक्ष उप ग्रमकार वारा अश्वीराप करता विराप - वारा कर क्षात्र प्राप्त विभाव व'त्र चार्टीन धावप - ह्याप्यपण निरिष्धण धापत्माय कर्ष त्याम रापत्रा यद्म क्र-अश्वरत तथ अश्वरण प्रश्रीिकन पनित्वल्पन अनी खिरूके महत् हर्मिनीक पण्डाहर करा चीना दे - अध्वत योगिक्या वेर क्-अभास्मा लारहप्र किरोत येरे अप्रक नहाराहण्य द्यान अक्रान किंदुसम्म ७ शां ि उर प्रीयाय विसरा एत्मसा राउँ त्यारक रापरण वृद्धि छ १६ वक विश्म भाषिकान म या छ र विस्तु रकत्व र ११ ते छ छ अभाजार हिन्द्रभागीत का किन अयर राप्त्रभाग किन्द्रभाग हल दिन हम ग्राम स्था म्राम् किरोत राष्ट्र किंद्य यारा प्रमुचिन्त्राम म क्रान्य कु- भा भाव प्राप्तिक अश्रास्त्र निक्यत्यपदानीय द्वीत रण्डेह्मारक हैया कि कहन। अरे निरार हैन कम्पत्म प्रचीस अव प्रिण दान



युक) जन्न विन्यु अ, क्र- अश्कार भृषितीय ज्यारे गृष्टिक अर्बु व रवर छ । इ: एक क्रमञ्चरिक ज्याया व्यार्थिय ज्यारे जन्म व्यार्थिय ज्यारे क्रम व्यार्थियायां ज्यारे क्रम व व्यार्थियायां ज्यारे क्रम व व्यार्थियायां ज्यारे क्रम व व्यार्थियायां ज्यारे क्रम व व्यार्थियां ज्यार्थियां ज्यारे क्रम व व्यार्थियां क्रम व व्या

जक्रकियाम, क्र- सः प्रभव क्र-अवपत्तव स्थानिकाव कथा क'नता मि ब्यायाक कार्यारा कथारमिक पाराजानयम किन्हा

पद्मितिन्त्रभ अभाषः अञ्चल भूष विस्ति काल। तक विश्वास पद्मितिन्त्र अभाष्ट्रक प्राप्ति वास्ति विश्वास विस्ति काल। तक विश्वास पद्मितिन्त्र अभाष्ट्रक विश्वास पद्मितिन्त्र विश्वास विस्ति काल। तक विश्वास पद्मितिन्त्र अन्ति विश्वास विस्ति विश्वास विस्ति विश्वास विस्ति विश्वास विस्ति विश्वास विस्ति विश्वास विस्ति विश्वास वि

य) अल्क्ष्यत कर जीतन व्यक्ति।

है नापरभर कर्याक्या कर्याक्या कर्याक्रिक व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति।

क्ष्मुक व्यक्ति क्रिया क्रिक्ति क्रिक्ति व्यक्ति क्रिक्ति व्यक्ति व्यक्ति।

क्रिक्त अक्रुय्वक विस्तार क्रिक्ति विद्या क्रिक्ति।

क्रिक्त अक्रुय्वक विस्तार क्रिक्ति विद्या विद्यक्ति विद्या विद्या व्यक्ति।

क्रिक्त अक्रुव्यह व्यक्ति विद्या विद्या विद्यक्ति विद्या विद

ब्ला क्रिंडिंट विर्म क्रिंडिंड अल्क्षाका अल्क्षाका अल्क्षाका अल्क्षाका व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति व

भ) अनु व नि मिनिक रिश्व , किल । क्रिंग जन्मारण रेप्टर व्यर्थ स्वरी यूरी

खन्न किल्म ज्ञान क्या कु - अल्माव नाश्व अधिय जिल्ला खरान क्या क्या किल्ला ।